राजलदेसर, 2 फरवरी। ''वीर कौन होता है ? इस प्रश्न के उत्तर में आयारो की वाणी को पढा जाए, जहां कहा गया है – जो जागरुक होता है, अप्रमत्त होता है, जिसमें वैर भाव नहीं है, जो प्रतिशोध नहीं लेता, वह वीर होता है। जो बंधे हुए को मुक्त करा दें वह वीर होता है।'' उक्त उद्‌गार राष्ट्रसन्त युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण ने 147वें मर्यादा महोत्सव के पावन प्रवास के दौरान अध्यात्म समवसरण में धर्मसभा के मध्य व्यक्त किए।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा – जो सोया हुआ, मूर्च्छा में रहता है, वह वीर नहीं कायर होता है। जो मूर्च्छा में रहता है वह अपना नुकसान कर लेता है। क्षमा वही कर सकता है जो वीर है। शक्तिमत्ता होने के बाद भी क्षमा करे वह बड़ी बात है। 'क्षमा वीरस्य आभूषणम्' क्षमा वीरों का भूषण, आभूषण है। कायरों का नहीं।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा – अज्ञानी लोग सोये हुए रहते हैं। ज्ञानी लोग सदा जागरुक रहते हैं। श्रीमद्‌भागवत गीता में कहा गया है जब सब प्राणी सोते हैं उस समय संयंमी जागता है। जीता वही है जो जागरूक रहता है। अध्यात्म की जागरणा में संयमी जागता है और असंयमी सोता है। विषयभोग में असंयमी जागता है तब असंयमी सोता है। मूर्छा–मोह की निद्रा से साधक को मुक्त रहना चाहिए। वैर भाव की भावना साधु को नहीं रखनी चाहिए।

श्रावक–श्राविकाओं के प्रति आचार्यश्री ने मांढा की ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करते हुए कहा श्रावक–श्राविकाएं सामायिक के प्रति जागरूक रहें, शुद्ध सामायिक कर लेने पर श्रावक भी श्रमण जैसा बन जाता है। सामायिक में जप–स्वाध्याय कर ली जाए तो वह ज्यादा निर्मलता वाली पल सकती है। श्रावक को चौबिसी सीखनी चाहिए एवं बारह व्रतों को जीवन में धारण करना चाहिए।

इससे पूर्व 'आचार्य महाप्रज्ञ को नमन हमारा' कार्यक्रम चला जिसमें 121 से अधिक साधु–साध्वियों ने तीन दिनों तक स्वरचित काव्यों की अभिव्यक्तियां प्रस्तुत की। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने कहा – इस एक इंगित को सर्व साधु–साध्वियों ने जो महत्व और मान दिया, यह बड़ी बात है। अभ्यास–प्रयास किया जाए तो उसमें सिद्धी मिल सकती है। साधु–साध्वियों में अर्हता का विकास हों, बौद्धिक कल्पना शक्ति का विकास हो। काव्य रचनाओं में शब्द योजना ठीक होनी चाहिए, भाव भी ठीक होने चाहिए, तभी एक अच्छी काव्य शक्ति का विकास हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत ने किया।